IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 2, September 2023

पर्यावरण और समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

प्रोफेसर (डॉ०) जय किरन
राजकीय गर्ल्स कॉलेज आँवलखेड़ा आगरा

प्रस्तावना

हम जिस वातावरण और परिवेश के चारों ओर से घिरे हैं उसे पर्यावरण कहते हैं। पर्यावरणीय समाजशास्त्र यह शब्द दो शब्दों पर्यावरण और समाजशास्त्र का संयोजन है यहां पर्यावरण का तात्पर्य लोगों, अन्य जीवों, भूमि, पानी हवा एवं धरती पर उपलब्ध हर उस आवश्यक वस्तु के परस्पर संबंध से है, जो भौतिक जीवन के लिये अति आवश्यक है। वहीं समाजशास्त्र उस समाज के व्यवस्थित अध्ययन की विधा है जिसमें हम रहते हैं। इसका संबंध लोगों समूहों, संस्थानों, उनके परस्पर संबंध–संवाद और इनके परिणामों तथा सामाजिक ढांचे के हर उस पहलू से है, जो सामाजिक जीवन के लिये जरूरी हैं इससे सामान्यतः यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि पर्यावरणीय समाजशास्त्र मानव समाज और उनके भौतिक पर्यावरण के संबंधों के अध्ययन का तरीका है, जिसे आर उनलप और केटन ने सामाजिक पर्यावरणीय संबंध कहा है (Dunlap and Rosa 2000-Encyclopeda, 2000)। समाज और पर्यावरण के ये संबंध और परस्पर क्रिया–प्रतिक्रिया एक दूसरे को गहरे स्तर पर प्रभावित करते हैं। पारस्परिक क्रियाओं का परिणाम ही पर्यावरणीय चिंताओं और समस्याओं के तौर पर उभरकर सामने आया है। वैश्विक मौसम परिवर्तन, मृदा गुणवत्ता में गिरावट, जैवविविधता का ह्रास, ओजोन परत को हानि, ठोस कचरा प्रदूषण, अम्ल वर्षा जलस्तर में गिरावट जैसी कई गंभीर पर्यावणीय चिंताएं लगातार बढ़ना इसके बड़ी उदाहरण हैं।

इस इकाई के प्रारंभ में हम अध्ययन शाखा के तौर पर पर्यावरणीय समाजशास्त्र के उद्भव एवं विकास को समझने का प्रयास करेंगे। आगे हम मानव और पर्यावरण संबंधों की प्रकृति को सैद्धांतिक रूप से जानने के साथ परीक्षण भी करेंगे। इन पर्यावरणीय समस्याओं को समझने के दौरान हम औद्योगीकरण शहरीकरण और वैश्वीकरण की निरंतर जारी प्रक्रिया के कारण जैविक भौतिक पर्यावरण पर पड़ रहे प्रभाव की पहचान और वास्तविक वजहों को सुनिश्चित करने की ओर बढ़ेंगे पर्यावरण के स्तर में व्यापक क्षय को ध्यान में रखते हुये हम पर्यावरणीय मुद्दों से उत्पन्न हो रहे संघर्ष और शक्तियों के उपयोग पर भी ध्यान केंद्रित कर सकेंगे। चूंकि समाज में शक्तियों एवं अधिकार का असमान प्रयोग पर्यावरणीय फलक पर समस्याओं के परिणाम के तौर पर संघर्ष को जन्म देता है, लिहाजा हमारी यह इकाई समाज–पर्यावरण संबंधों के संदर्भ में सामाजिक असमानता के महत्व को भी विस्तार से समझाने का प्रयास है। यहां यह भी समझना आवश्यक है कि चिपको आंदोलन, नर्मदा बचाओ, अर्थ ऑवर, पर्यावरणीय न्याय आंदोलन, ग्रीनपीस समेत विभिन्न पर्यावरणीय आंदोलन भी समाज और पर्यावरण संबंधों के बीच की उस अवस्था में संतुलन स्थापित करने के प्रयास रहे, जो जाहिर तौर पर समाज की ओर झुकाव में तो थे, लेकिन लंबे समय के परिणामों को ध्यान में रखा जाये तो यह न तो समाज और न ही पर्यावरण के पक्ष में रह सके।

सामाजिक सुधार और परिवर्तन के लिये चलाये गये इन आंदोलनों के कारण उपजे बौद्धिक एवं राजनीतिक विक्षोभ ने एक नये क्षेत्र के विकास का रास्ता तैयार किया, जो आगे चलकर पर्यावरणीय समाजशास्त्र के तौर पर विकसित हुआ। (Hannigan, 1995).

1.2: पर्यावरणीय समाजशास्त्र का उद्भव (Emergence of Environmental Sociology)

पर्यावरणीय समाजशास्त्र के उद्भव के बारे में चर्चा से पहले हमें गिफर्ड पिन्सो जॉर्ज पर्किन्स मार्श, आल्डो लियपोल्ड एवं अन्य संरक्षणवादियों तथा जॉन म्योर, रॉबर्ट मार्शल व अन्य परिरक्षावादियों के योगदान पर ध्यान देना होगा, जिन्होंने जीवमंडल (Biosphere) एवं इससे संबद्ध पारिस्थितिकी तंत्र (Ecosystem) के नाजुक होने और मानवीय गतिविधियों से इसे होने वाले नुकसान पर प्रकाश डाला औद्योगीकरण और द्वितीय विश्व युद्ध के बाद इसके विकास की तेज गति ने न सिर्फ प्राकृतिक पर्यावण को मानवीय अतिक्रमण के दायरे में ला दिया, बल्कि संसाधनों के अत्यधिक दोहन और औद्योगिक कचरे ने इन्हें गिरावट और कई मायनों में विनाश के स्तर तक ला खड़ा किया।

पर्यावरणीय चिंताओं से जुड़े महत्वपूर्ण तथ्य

सैमुअल क्लाउजनर ने अपनी पुस्तक On Man in His Environment (1971) में सबसे पहले पर्यावरणीय समाजशास्त्र (Environmental Sodology) का इस्तेमाल किया

22 अप्रैल 1970 को पहली बार Earth Day 1970 मनाया गया, जिसे आधुनिक पर्यावरण आंदोलन की शुरुआत के तौर देखा जाता है

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 2, September 2023

70 का दशक पर्यावरणीय दशक (Environmental Decade) के तौर पर जाना गया • रेचल कार्सन ने Silent Spring (1962) में कृषि में इस्तेमाल किये जा रहे कीटनाशकों से पारिस्थितिकी तंत्र को हो रहे नुकसान का खुलासा किया

1970 से पहले तक पर्यावरण के संदर्भ में अमेरिकी रुचि ग्रामीण समाजशास्त्र (rura soddlogy) तक ही सीमित थी। यहां ग्रामीण समाजशास्त्र का तात्पर्य दो बिंदुओं, 1. समाज की आजीविका के लिये प्रकृति पर निर्भरता और 2. वन क्षेत्रों से था। हालांकि, 1980 और 1970 के दशक ऐसे हलचल वाले दशक साबित हुये, जिन्होंने बुद्धिजीवियों एवं शिक्षाविदों को पर्यावरण के संदर्भ में अपने दृष्टिकोण पर पुनर्विचार करने को प्रेरित किया।

Silent Spring (1962)

यह राचेल कार्सन द्वारा डीडीटी जैसे कृषि कीटनाशकों के अंधाधुंध इस्तेमाल से पर्यावरण को होने वाले नुकसान पर दस साल के गहन शोध के बाद लिखी गयी पर्यावरण विज्ञान पुस्तक है। इस पुस्तक के जरिये कार्सन ने बताया कि कीटनाशकों का प्रयोग प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र से कीटों को खत्म करने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह मानव अस्तित्व के लिये भी घातक है। इस पुस्तक ने न सिर्फ अमेरिकी जनता को पर्यावरणीय चिंताओं के प्रति सोचने को प्रेरित किया, बल्कि यह नीतियों में परिवर्तन की भी कारक बनी और यूएस पर्यावरणीय संरक्षण एजेंसी यानी US Environmental Protection Agency (EPA) के गठन का श्रेय भी इस पुस्तक को दिया जाता है।

अमेरिका में पर्यावरणीय समाजशास्त्र के संस्थापक रिले डनलप और विलियम कैटन तथा इस क्षेत्र में योगदान देने वाले अन्य विशेषज्ञों ने पर्यावरणीय मुद्दों के समाजशास्त्र (Sociology of environmental issues) और पर्यावरणीय समाजशास्त्र (environmental sociology) के अंतर को स्पष्ट किया है। हन्निगन (Hannigan] 1995) बताते हैं– 'पर्यावरणीय मुद्दों के समाजशास्त्र का अर्थ पारंपरिक सामाजिक दृष्टिकोण के संदर्भ में पर्यावणीय कार्यकर्ताओं – समूहों की ओर से तैयार की जाने वाली रणनीतियों और इनके जरिये तय होने वाले जनमत, सामाजिक आंदोलन, औपचारिक संगठनात्मक कदम उठाये जाने से है। जबकि पर्यावरणीय समाजशास्त्र पर्यावरण–समाज के संबंधों (जैसेः आधुनिक औद्योगिक समाज और उस भौतिक पर्यावरण के संबंध, जिसमें यह समाज व्यवस्थित है)' के अध्ययन पर केन्द्रित है।'

पर्यावरण के प्रकार

मुख्यतः पर्यावरण दो प्रकार का होता है :–

- प्राकृतिक पर्यावरण
- मानव द्वारा निर्मित पर्यावरण

पारिस्थितिकी

पारिस्थितिकी शब्द का अर्थ एक ऐसे जाल से है जहाँ भौतिक और जैविक व्यवस्थाएँ तथा प्रक्रियाएँ घटित होती हैं तथा मनुष्य भी इसका एक अंग होता है। नदियाँ, पर्वत, सागर, मैदान, जीव जंतु सभी पारिस्थितिक अंग हैं।

सामाजिक पारिस्थितिकी

वह विज्ञान जो पर्यावरण तथा जीवित वस्तुओं के बीच के संबंधों का अध्ययन करता है उसे सामाजिक पारिस्थितिकी कहते हैं।

पारिस्थितिकी तंत्र

वह परितंत्र जिसका हिस्सा पशु, पौधे तथा पर्यावरण होते हैं, पारिस्थितिकी तंत्र कहलाता

सामाजिक पर्यावरण

सामाजिक पर्यावरण का उद्भव जैव – भौतिक पारिस्थितिकी तथा मनुष्य के हस्तक्षेप की अंतःक्रिया के कारण होता है। यह दो – तरफा प्रक्रिया है जिस प्रकार समाज को आकार देती है, ठीक उसी प्रकार से समाज भी प्रकृति को आकार देता है।

दो तरफा प्रक्रिया

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 2, September 2023

• प्रकृति समाज को आकार देती है :– सिंधु, गंगा के बाढ़ के मैदान की उपजाऊ भूमि न कृषि के लिए उपयुक्त है उसकी उच्च उत्पादकता क्षमता के कारण यह घनी आबादी का क्षेत्र बन जाता है।
• समाज प्रकृति को आकार देता है :– पूंजीवादी सामाजिक संगठनों ने विश्वभर की प्रकृति को आकार दिया है। शहरों में वायु प्रदूषण तथा भीड़–भाड़, प्रादेशिक झगड़े तेल के लिए युद्ध तथा ग्लोबल वार्मिंग प्रकृति को प्रभावित किया है।

पर्यावरण की प्रमुख समस्याएँ ओर जोखिम

संसाधनो की क्षीणता :– अस्वीकृत प्राकृतिक संसाधनो का प्रयोग करना पर्यावरण की एक गंभीर समस्या है। भूजल के स्तर में लगातार कमी इसका एक उदाहरण है।

प्रदूषणः–

• पर्यावरण प्रदूषण आज के समय में एक बहुत बड़ी समस्या बनता जा रहा है। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, भूमि प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण इत्यादि ऐसे प्रदूषण हैं जिन्होने हमारे पर्यावरण को इतना दूषित कर दिया है कि शुद्ध वायु और जल का मिलना असंभव हो गया है।
• वैश्विक तापमान वृद्धि प्रदूषण की सबसे बड़ी समस्या हमारे सामने आ रही है वैश्विक तापमान वृद्धि के रूप में विश्वव्यापी तापीकरण के कारण हमारा पर्यावरण उलट – पलट हो गया है। अधिक गर्मी हो रही है जिससे ध्रुवों की बर्फ पिघल रही है तथा महासागरों में पानी की मात्रा बढ़ रही है। इससे कई द्वीपों के डूबने का खतरा उत्पन्न हो गया है।

जैनेटिकल मोडिफाइड आर्गेकनजम्स :–

वैज्ञानिक जीन स्पेलिसिंग की नई तकनीकों के द्वारा एक किस्म के गुणों को दूसरी किस्म में डालते हैं ताकि बेहतरीन गुणों से भरपूर वस्तु का निर्माण किया जा सके।

पर्यावरण की समस्याएँ सामाजिक समस्याएँ भी हैं

पर्यावरण की समस्याएँ सामाजिक समस्याएँ भी हैं क्योंकि पर्यावरण प्रत्यक्ष रूप से समाज को प्रभावित करता है। मनुष्य अपने निजी स्वार्थ के लिए पर्यावरण को काफी समय से है प्रदूषित करता आ रहा है तथा प्राकृति संसाधनों का दोहन करता आ रहा है। मनुष्यों के इन कृत्यों के कारण ही प्रकृति विनाश की तरफ बढ़ रही है तथा मनुष्य को प्रकार की पर्यावरण संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

पर्यावरण से संबंधित कुछ विवादास्पद मुद्दे :–

• चिपको आन्दोलन (उत्तराखण्ड)
• नर्मदा बचाओ आंदोलन (एम पी और गुजरात)
• चिपको आन्दोलन (उत्तराखण्ड)
• नर्मदा बचाओ आंदोलन (एम पी और गुजरात)
• भोपाल औद्योगिक दुर्घटना (मध्य प्रदेश)

पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता

पर्यावरण के संरक्षण की बहु आवश्यकता है क्योंकि जीवन जीने के लिए पर्यावरण सबसे महत्वपूर्ण कारण है। अगर वायु प्रदूषित हो गये तो हे स्वस्थ जीवन नहीं जी पायेंगे और भावी पीढ़ी के लिए प्राकृतिक संसाधनों की कमी हो जाएगी।

ग्रीन हाउस

पौधों की जलवायु को अधिक ठंड से बचाने के लिए ढका हुआ ढांचा जिसे हरितगृह भी कहते हैं। इसमें बाहर की तुलना में अंदर का तापमान अधिक होता है।

प्रदूषण के प्रकार

• **वायु प्रदूषण :–** उद्योगो तथा वाहनों से निकलने वाली जहरीली गैसे तथा घरेलू उपयोग के लिए लकड़ी तथा कोयले को जलाने से।
• **जल प्रदूषण :–** घरेलू नालियाँ, फैक्ट्री से निकलने वाले व्यर्थ पदार्थ, नदियों तथा जलाशयों में नहाना तथा कूड़ा कर्कट डालना।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 2, September 2023

• **ध्वनि प्रदूषण :–** लाउडस्पीकर, वाहनों के यातायात के साधनों का शोर, मनोरंजन के साधनों से निकलने वाली आवाजें, पटाखे आदि ।

• **भूमि प्रदूषण :–** खेतों में कीटनाशक दवाओं, रसायनिक खादों का प्रयोग, शहरी कूड़ा कर्कट, सीवरेज, तेजाबी वर्षा से रसायनिक पदार्थों का मिट्टी में मिलना।

• **परमाणु प्रदूषण :–** परमाणु परीक्षण से निकलने वाली किरणें।

उपसंहार

इस इकाई के माध्यम से हमने दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में पर्यावरणीय समाजशास्त्र के अलग शैक्षिक शाखा के रूप में विकास और इसके उद्‌भव के संदर्भों के बारे में जाना। आगे हमने रॉबर्ट ई. पार्क, रिले डनलप, विलियम कॉटन और एलेन श्नाईबर्ग के कार्यों के माध्यम से मानवीय गतिविधियों से पर्यावण पर पड़ने वाले प्रभावों और इनके सामाजिक असर को विस्तार से जाना। हमने पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान और पर्यावणीय चिंताओं, मानव समाज और जैवभौतिकीय पर्यावरण के संबंधों और पर्यावरणीय संकट के विषय में मानवीय दायित्वों के बारे में समझा। हम यह स्पष्ट रूप से जान चुके हैं कि वैश्विक स्तर पर पर्यावरणविदों, वैज्ञानिकों और समाजशास्त्रियों की ओर से दिये गये। सैद्धांतिक विचारों तथा विभिन्न पर्यावरणीय आंदोलनों के जरिये यह विमर्श सतत चलने वाली प्रक्रिया है। इस तरह पर्यावरणीय समाजशास्त्र का स्वरूप भी निरंतर गतिशील और व्यापक प्रभावी है।

सन्दर्भ (References)

[1]. Edition- Thousand Oaks- Pine Forge Press- CA: Sage Publications. India- Chapter–1, (pp-1–29)
[2]. Dunlap, RE and Eugene A. Rosa. 2000- Environmental Sodology.entry in Encydopedia of Sociology. 2nd Edition. Vol.2. edited by E.F. Borgatta and Rhonda JV. Montgomery. Macmillan Reference USA- (pp-800–813)
[3]. Hannigan, JA. 1995. Environmental Socidogy. 2nd Edition Routledge London and New York. Chapters–1–2 (pp- 1–35)
[4]. Hadhiya N. 2006. The History and the Present of Minimata Disease– Entering the Second Half of a Century. artide in MAJ. March 2006. Vol.49. No.3. (pp. 112–118)
[5]. Pellow, D.N. and H.N. Brehm. 2013. An Environmental Sociology for the Twenty–First Century-artide in Annual Review of Soddogy. 2013.39. (pp. 229–250)
[6]. Schnaberg, A. 1975. Social Synthesis of the Societal – Environmental Dialectic The Role of Distributional Disputes. atide in Social Sdence Quarterly. June 1975 Vol. 56. No. 1. (pp. 1–7)
[7]. White, R. 2004. Controversies in Environmental Sociology. Cambridge University Press Introduction (pp. 1–7).